अमृतलाल नागर का साहित्य

डॉ. आर.एम. जाधव
डॉ. भगवान जाधव

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी

1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फ़ोन : +91 9968084132, +91 9910947941

arpublishingco11@gmail.com

AMRITLAL NAGAR KA SAHITYA : UPLABDHI AUR PRADEY

Edited by Dr. R.M. Jadhav, Dr. Bhagwan N. Jadhav

ISBN : 978-93-862-36-21-0

© सम्पादकद्वय

संस्करण : 2017

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में गाँधी दर्शन 69
—प्रा. डॉ. रणजीत जाधव

जिस्म, रूह और सियासत की आपसी जंग : सात घूँघटवाला मुखड़ा 74
—डॉ. गोविन्द बुरसे

करवट : एक अवलोकन 82
—डॉ. अनीता रावत

अमृतलाल नागर के बाल उपन्यास 89
—डॉ. संजय जाधव

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में नारी चिन्ता, चिन्तन एवं सृजन 100
—डॉ. रेखा प्रभुदास गाजरे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित राजनीतिक समस्याएँ 116
—डॉ. जयंत डी. बोबडे

मानव की पीड़ा से प्रेरित रचनाकार : अमृतलाल नागर 125
—प्रा. डॉ. मनोहर गं. चपळे

'अग्निगर्भा' उपन्यास में व्यक्त स्त्री-संवेदना 130
—डॉ. अलका गडकरी

नाच्यौ बहुत गोपाल उपन्यास में दलित विमर्श 135
—डॉ. सुधीर ग. वाघ

विनाश और संघर्ष का आक्रोश 'एटम बम' कहानी 140
—डॉ. विजयकुमार एस. वैराटे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिक समस्याएँ 143
—प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार

अमृतलाल नागर का नाट्य साहित्य 148
—डॉ. प्रतिभा येरेकार

'बिखरे तिनके' उपन्यास की प्रासंगिकता 151
—प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील

'अगर आदमी के दुम होती' रचना में व्यक्त हास्य-व्यंग्य 156
—डॉ. रेणुका मोरे

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिक समस्याएँ

प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार

अमृतलाल नागर हिन्दी साहित्य कें श्रेष्ठ उपन्यासकारों में से एक हैं। नागर जी उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ हैं। समाज, धर्म, संस्कृति, राजनीति, अर्थ आदि विभिन्न स्थितियों का वास्तविक चित्रण किया है। अंधश्रद्धा, अनमेल विवाह, नारी शोषण, वेश्याओं की समस्या, धार्मिक आडंबर, सांस्कृतिक विषमतायें, धार्मिक विडम्बनायें एवं विकृतियाँ, सांप्रदायिक समस्याएँ आदि का प्रभावी चित्रण किया है।

सांप्रदायिक समस्या का मूलकारण धार्मिक पाखंड, जातिगत एवं धर्मगत द्वेष, संकीर्ण धार्मिक मानसिकता, जातिगत असमानता एवं धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगती, विकृती एवं विडम्बनाये हैं। वर्तमान परिदृश्य में भी सांप्रदायिक समस्या ने संपूर्ण विश्व को खोखला बना दिया है। धर्म के कुछ स्वार्थी ठेकेदार अहिंसा, कर्मकांड, द्वेष, घृणा, व्याभिचार, पुरुषी अहंकारी स्त्री शोषित मानसिकता, लिंग, वर्ग असमानता को बढ़ावा दे रहे हैं। हिंन्दी साहित्य नें सांप्रदायिक समस्या और उसका समाज जनमानस पर होने वाले परिणाम को प्रभावी रूप से वाणी प्रदान की। असमानता एवं विकृतियों को कमजोर कर जनमानस को सचेत करने का प्रयास किया। अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यासों में सांप्रदायिक एवंम सामाजिक समस्याओं को उघाड़ा है। 'एकदा नैमिषरण्ये', 'सुहाग के नूपुर', 'बूँद और समुद्र', 'राहों का बिखराव', 'मानस का हंस', 'खंजन नयन', अमृत और विष', 'सात घूँघटवाला मुखड़ा', 'नाच्यौ बहुत गोपाल', 'महाकाल', 'गदर के फूल', 'बिखरे तिनके', 'अग्निगर्भा', 'नवावी मसनद', 'करवट', 'चैतन्य महाप्रभु', 'पीढियाँ', 'शतरंज के मोहरे' एवं सेठ बांकेमल आदि नागर जी के उपन्यास हैं। इनके उपन्यासों में सामाजिक विसंगती, बिडंबनाओं, विषमताओं एवं विकृतियों को अभिव्यक्त किया है। भारतीय संस्कृति की व्यापकता एवं भव्यता के दर्शन इनके उपन्यास में होते हैं।

अमृतलाल नागर ने सांप्रदायिक समस्या को वाणी प्रदान कर समानता, अहिंसा, एवं मानवता को स्थापित करने का प्रयास किया है। सांप्रदायिकता मानव के अविवेकी एवं स्वार्थवृत्ती की देन है। आपने धर्म एवं जाति को सर्वश्रेष्ठ मानकर दूसरे धर्म एवं जाति

की अवहेलना करने से हीं सांप्रदायिक उन्माद पनपता हैं। आज के भौतिकवादी और वैश्वीकरण के दौर में भी धर्म मानव एवं मानवता पर हावी हो गया हैं। धार्मिक कट्टरता नें मनुष्य को पशु बना दिया हैं। धर्म के नाम पर आतंकवाद, हिंसा, और द्वेष को बढ़ावा दिया जा रहा हैं। सांप्रदायिकता ने मानव सोच को विषैला एवं दौना बना दिया हैं। धर्म के नाप मर जिन राष्ट्रों ने और लोंगो ने राजनीति और आतंकवाद को बढ़ावा दिया आज वहीं राष्ट्र हिंसा के केंद्र बन गए हैं। सीरिया, लीबिया, इरान, इराक, अफगाणीस्तान पाकिस्तान, सोमालिया, टयुनेशिया आदि राष्ट्र सांप्रदायिकता के आग में जल रहे हैं। जिस राष्ट्र की राजनीति धर्म केन्द्रित है वह राष्ट्र सांप्रदायिकता से झुलस रहे हैं। आम तौर पर देखा जाए तो राजनीति ने ही सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया है।

सत्ता पाने की लालसा ने नेताओं को विकृत बना दिया है। राजनीति विकास केन्द्रित न रहकर धर्म, जाति, वर्ग, भाषा, संप्रदाय केन्द्रित हो गई है। चुनाव के माहोल में सत्ता हतयाने के लिए नेता सांप्रदायिक विवादों का, दंगो का सहारा लेते हैं। हिंन्दू-मुसलमानों में जहर फैलाते हैं। भड़कीली बयान बाजी करते हैं।

संप्रदाय एवं धर्म केन्द्रित राजनीति ने विकास के राह में गतिरोधक निर्माण किए हैं। सांप्रदायिकता ने मानवता को तार-तार कर दिया है। चुनाव जीतने का सांप्रदायिकता प्रमुख हत्यार बन गया है। शहर की राजनीति ने तो नीचता की सारी हदें तोड़ दी हैं। इस सन्दर्भ में 'अमृत और विष' उपन्यास का हिदायत कहता है, 'अम्माँ, ये हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा तो हमने सिर्फ यहाँ शहर ही में आके देखा, हमारे गांव में तो यह तमाशा अभी तक दिखलाई नहीं देता है।' नागर जी ने सांप्रदायिकता को उजागर कर धर्म के भेद-भाव और पाखण्ड को दूर कर सच्ची आस्थाओं को स्थापित करने का प्रयास अरविन्द शंकर के माध्यम से किया है।

धर्म के ठेकेदारों ने अपने स्वार्थ, लालसा और वासना को पूरा करने के लिए भोले-भाले लोंगो के साथ खिलवाड़ कर धर्म का नाजायज फायदा उठाया है। सत्ता, प्रसिद्धी और भौतिक सुख-साधनों की लालसा से ग्रसित होकर बाह्य आडंबर, पाखंड ढोंग को महत्व दिया हैं। धर्म तो कुछ लोगों के लिए नीच कर्म को छुपाने का ढक्कन बन गया हैं। ऐसे पाखंडी, ढोंगी धर्मसाधकों को दंड की बात नागर जी करते हैं। वे एकदा नैमिषारण्ये उपन्यास में कहते हैं। 'मनुष्य का सबसे बड़ा स्वामी उसका धर्म हैं और जो व्यक्ति धर्म का ढोंग करता हुआ भी वास्तविक धर्माचरण छोड़ दे, उसे कोटि वैरी सम दंड देना चाहिए, भले वह परम स्नेही ही क्यों न हो।'[१२] वास्तव में कर्मकांड और आडंबर को बढ़ावा देने के लिए वास्तविक धर्म लोगों के सामने आने नहीं दिया है। परंपरा, रीति-रिवाज, सभ्यता और संस्कृति के नाम पर केवल कर्मकांड को परोसा गया है। ऐसे लोग दंड के हकदार होते हैं।

नागर जी मूर्ति पूजा को गलत मानते हैं। मूर्ति पूजा के नाम पर सामान्य जन को ठगा जा रहा है। उन्हें भ्रमित किया जा रहा हैं वे कहते हैं मूर्ति तो भक्त के मन में भक्ति

और श्रद्धा का भाव जागृत करने का साधन मात्र हैं। मूर्ति ही सर्वस्वी नहीं हैं ये प्रतीक तो सहज एक बहाना हैं जिनके सहारे अनायास हमारा मन अपनी इच्छा शक्ति को किसी दिशा की ओर बढ़ाने के लिए जगता है। वह चेतना उपरी सतह पर मन की, किसी अनजानी गहराई से आती हैं।' ईश्वर भक्ती का सन्दर्भ आत्मा से और मनुष्य के अंतरजगत से है। बाह्य जगत तो ढोंग मात्र हैं। मूर्ति उपासना में तो कोई सत्य नहीं हैं। सज्जन के माध्यम से नागर जी कहते हैं आखिर इन्सान इन मूर्तियों में देखता किसको है, रीझना किस पर है। हिन्दुस्तान के अनेक मन्दिरों में जाकर भी उसने केवल वहां की कला ही देखी है, भगवान को नहीं।' वास्तव में तो भगवान सर्वत्र हैं लेकिन लोग उसको केवल मूर्तीमात्र में ही देखते हैं। धार्मिक आस्था अत्मिक बल के रूप में स्वीकार्य हैं। ईश्वर भक्ती का केन्द्र मानव मन हैं। पाप-पुण्यलोक-परलोक, पुनर्जन्म, आदि सारी संकल्पनाएँ घातक है धार्मिक कट्टरता, धर्म के रीति-रिवाजों का अंधानुकरण, धर्म के नाम पर आडंबरों को एवं शोषित कुपोषित परंपरा को बढ़ावा देना सांप्रदायिक उन्माद को जन्म देता है।

भारत में प्राचीन काल से ही हिन्दू एवं मुसलमानों में संघर्ष होता रहा है। हिन्दु-मुस्लिम एकता न होने के कारण सांप्रदायिक माहौल बिगड़ जाता हैं। हिन्दू-मुस्लिम एकता में बाधक तत्वों का नागर जी ने विरोध किया है हिन्दू में वर्ण व्यवस्था के कारण शोषित वर्ग धर्म परिवर्तन करता है। मुसलमानों द्वारा भी प्रलोभन देकर या जबरन धर्म परिवर्तन आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग का किया जाता हैं जिस कारण धार्मिक एकता में बाधाएँ निर्माण होती हैं। धार्मिक अस्थिरता एवं विवाद मानवता का सबसे बड़ा दुश्मन है। नागर जी कहते हैं, 'जब तक हिन्दुस्तान में यह जटिल जातिभेद रहेगा, हम लाख सुधार करने पर भी समाज को मानव समाज के रूप में प्रतिष्ठित करने में असमर्थ रहेगी।'[5] मानवता की प्रतिष्ठापना के लिए एवं लोकल्याण के लिए एकता अत्यंत्य आवश्यक है। नागर जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे हैं।

'मानस का हंस' उपन्यास में तुलसीदास हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए प्रयत्नशील हैं। वे कहते हैं, जाति-पाति, वर्ण-वर्ग आदि सब कुछ अपनी जगह पर ठीक है पर एक जगह मनुष्य केवल मनुष्य होता है सेठ बांकेमल उपन्यास में भी हिन्दू-मुस्लिम एकता का ही समर्थन किया गया हैं। 'जहां देखों साला हिन्दू-मुसलमानों का दंगा हो रहा है। वह कहते हैं कि हिन्दू ने मेरी निवाज बिगाड़ दीनी वो कहें वे कि मुसलमान ने मेरी गाय काट ली। इनको इतनी भी तमीज नहीं आई कि हम तो आपस में सिर फोड़ रहे हैं और अंग्रेज साले हमारी छाती पर पैठ खून पी रहे हैं हमारा।' नागर जी की पीड़ा इसमें व्यक्त होती हैं।

'नैमिष आन्दोलन को ही मैंने वर्तमान भारतीय हिन्दू संस्कृति का निर्माण करने वाला माना है। वेद, पुनर्जन्म, कर्मकांडवाद, उपासनावाद, ज्ञानमार्ग आदि का अन्तिम रूप से समन्वय नैमिषारण्य में हुआ और यह काम मुख्यतः एक राष्ट्रीय दृष्टि से ही किया गया था।' नैमिषान्दोलन में एक लाख श्लोंकों वाली महाभारत संहिता का पारायण तथा अन्य

पुराण ग्रन्थों का पठन-पाइन किया गया। बाहरी दुनिया से अनेक लोग यहाँ आ बसे और अनेक संस्कृतियों का जन्म भी यहाँ हुआ। विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना यहाँ होती थी। इस प्रकार की आराधाना में धर्म की मूलभावना को नष्ट कर दिया। अनेक देवी-देवताओं की कल्पना में आंडबरों को जन्म दिया। कालान्तर में विदेशियों के आक्रमण से धार्मिक आडंबरो की बहुलता हो गई। सांस्कृतिक-धार्मिक विचारधारा ब्राह्मण और श्रमण इन दो श्रेणियों में बंट गई थी। चार वर्ण, चार आश्रम, पशुबलि, यज्ञादि में ब्राह्मण संस्कृति विश्वास करती थी। श्रमण परंपरा में यज्ञ याग की अपेक्षा आत्मविद्या की महिमा थी। आत्मचिंतन, संयम, सम भाव, साथ, अहिंसा, तप, दान, उपवास, सन्यास आदि श्रमण संस्कृति की विशेषताएँ हैं।'

वर्णव्यवस्था के कारण अछूत निंदनीय एवं घृणित बन गए थे। शैव एवं वैष्णव में मतभेद थे। बौद्ध एवं जैन धर्म की विचारधारा भिन्न थी। अमृत जी ने सभी विविधता में एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया । राष्ट्र एकात्मता के लिए जाति-पाँति गत विविधता, संप्रदायों के बीच टकराव, धर्मांधता यह हानीकारक तत्व हैं। इन सभी में समन्वय स्थापित करने का प्रयास नागर जी नें अपने उपन्यास के माध्यम से किया। वर्तमान परिस्थिति में भी सांप्रदायिक माहौल अविश्वासपूर्ण और संवेदनशील हैं। धर्मांधंता ने मनुष्य की सोच एवं कर्म को जहरीला और विकृत बना दिया है।

मनुष्य को पशु बनाने में धर्मपाखंडी वृत्ती जिम्मेदार है। कर्मकांड, अंधश्रद्धा, यज्ञविधी, पुजा-अर्चा, वर्ण-व्यवस्था आदि के कारण सामाजिक विषमता, जातिगत विरोध जाति-पांति, सांप्रदायिकता, ऊँच-नीच भाव पणपने लगे। वर्णव्यवस्था के कारण शुद्रों को समाज में अत्यंत हीन स्थान प्राप्त हो गया और ब्राह्मणों को अत्यंत उच्च स्थान प्राप्त हो गया। शोषण, अन्याय, अत्याचार, घृणा तिरस्कार, अपमान, अवहेलना, आर्थिक निर्बलता एवं अभाव का अंतर जब बढ़ जाता हैं तो संघर्ष निर्माण होता हैं। लोगों ने कोई कसर नही छोड़ी हैं धर्म के नाम पर हिंसा, अन्याय, शोषण, घृणा, तिरस्कार, संघर्ष, विकृतियों एवं असमानता को बढ़ावा देने में जिस कारण धर्म के उदात्त, व्यापक, उपयुक्त विचार, सिद्धांत एवं सभ्यता को हानी पहुंच रही हैं। धर्म, जांति-पांति को एक अस्त्र के रूप में स्वार्थ, सत्ता, भोग एवं प्रसिद्धी के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। अम्रतलाल नागर नें साप्रदायिक सदभावना, राष्ट्रीय एकात्मता और शांति स्थापित करने का प्रयास उपन्यास के माध्यम से किया हैं।

धार्मिक विषमता और संघर्ष का फायदा नाजायज तत्व उठाते है, जिसका खामीयाजा भारत-वर्ष को उठाना पड़ता है। इसलिए भेद-भाव दूर होना आवश्यक है। भारत अनेकविध धर्म, जांति-पांति, वर्ग, संप्रदाय, भाषा, रीति-रिवाज, प्रथा-परंपराओं में बंटा हुआ देश है। अनेकता के तत्व में एकता स्थापित करने का प्रयास अमृतलाल नागर ने किया है। भावात्मक एकता की समस्या प्रमुख समस्या हैं। भावात्मक एकता के अभाव में द्वेष, घृणा, तिरस्कार, संघर्ष और दंगे बढ़ते हैं। इसलिए भावात्मक एकता स्थापित

करने का प्रयास नागर जी ने किया हैं। पौराणिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित एकदा नैमिषारण्ये उपन्यास के माध्यम से विविधता में एकता, स्थापित करने का एवं समन्वय का प्रयास किया गया है। नागर जी अपनी भूमिका में कहते हैं। अमृतलाल नागर जी नें मानवधर्म की स्थापना को महत्व दिया हैं। धर्म मनुष्य को पतित कर सकता हैं। धर्म मनुष्य को अविवेकी बना सकता हैं। धर्म के कारण द्वेष, घृणा अहंकार, विरोध, संघर्ष, असमानता, पशुता और हिंसा भी निर्माण हो सकती है। परंतु मानव-धर्म में समानता करुणा, दया, प्रेम, अहिंसा, समर्पण एवं वात्सल्य जैसे समाज हितकारी मूल्य विकसित होते हैं। समाज को ऐसे धर्म की आवश्यकता है। जिसमें सभी वर्गों की चिन्ता, एवं लोक कल्याण की भावना निहित हो। 'भजन से भक्ति जागती है तप और भय से ज्ञान जागता है और भक्ति भी। अतः भक्ति ज्ञान और कर्म तीनों का उचित समन्वय ही लोक-धर्म है। हमे इसी सिद्धांन्त को लेकर धर्म मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए।

सन्दर्भ

1. अमृतलाल नागर—अमृत और विष, पृ. 463
2. अमृतलाल नागर—एकदा नैमिषारण्ये, पृ. 216
3. अमृतलाल नागर—बूँद और समुद्र, पृ. 574
4. वही, पृ. 166
5. वही, पृ. 557
6. अमृतलाल नागर—मानस का हंस, पृ. 325
7. अमृतलाल नागर—सेठ बाँकेमल, पृ. 84